अध्याय - 4
रघुवीर सहाय (कैमरे में बंद अपाहिज)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर -

1. कवि रघुवीर सहाय का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

(1) 1929 ई लखनऊ (2) 1829 ई बिहार (3) 1939 ई. पंजाब (4) 1928 ई आगरा (1)

2. रघुवीर सहाय अज्ञेय द्वारा संपादित किस सप्तक के कवि थे?

(1) पहला सप्तक (2) दूसरा सप्तक (3) तीसरा सप्तक (4) चौथा सप्तक (2)

3. अज्ञेय द्वारा संपादित दूसरे सप्तक का प्रकाशन कब हुआ था?

(1) 1951 ई. मे (2) 1943 ई. में (3) 1953 ई. में (4) 1971 ई. में (1)

4. आधुनिक हिन्दी कविता 'रामदास' के लेखक कौन है?

(1) अज्ञेय (2) रघुवीर सहाय (3) निराला (4) कुंवर नारायण (2)

5. पीड़ा को परदे पर उभारते समय दूरदर्शन उद्घोषक का व्यवहार कैसा हो जाता है?

(1) संवेदनात्मक (2) मैत्रीपूर्ण (3) संवेदनहीन (4) हंसमुख (3)

6. 'कैमरे में बंद आपाहिज' कविता अपाहिज व्यक्ति के लिए किस प्रकार की सोच अपनाने के लिए प्रेरणा देती है?

(1) कठोरतापूर्ण (2) निरंकुश (3) संवेदनात्मक (4) क्रूरतापूर्ण (3)

7. अपाहिज व्यक्ति से कैमरे के सामने अनेक प्रकार के प्रश्न पूछे जाने के पीछे क्या उद्देश्य है?

(1) कार्यक्रम को रोचक एवं संवेदनात्मक बनाना (2) कार्यक्रम को छोटा बनाना

(3) कार्यक्रम को दुरूह बनाना (4) कार्यक्रम को बड़ा बनाना (1)

8. 'कैमरे में बंद अपाहिज' जैसे कार्यक्रम दूरदर्शन पर किस उद्देश्य को पूरा करते हैं?

(1) राजनीति (2) धार्मिक (3) शारीरिक (4) सामाजिक (4)

एक पंक्ति/शब्द के प्रश्नोत्तर -

1. रघुवीर सहाय की प्रमुख रचनाओं के नाम लिखो।

उत्तर- सीढ़ियों पर धूप में, आत्महत्या के विरूद्ध, हँसो-हँसो जल्दी हँसो (सभी कविता संकलन है)

2. रघुवीर सहाय का संबंध किस कविता से है?

उत्तर- समकालीन कविता से।

3. रघुवीर सहाय की कविता 'कैमरे में बंद अपाहिज' उनके किस संग्रह से ली गई है?

उत्तर- लोग भूल गए है, संग्रह से।

4. 'हमें दोनों एक संग रूलाने है' उपर्युक्त पंक्ति में दोनों शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

उत्तर- यहाँ दोनों शब्द दर्शक और अपाहिज व्यक्ति के लिए प्रयुक्त है।

5. **'हम दूरदर्शन पर बोलेंगे**

हम समर्थ शक्तिवान।'

उपर्युक्त पंक्तियों में 'हम समर्थ शक्तिवान' वाक्यांश किसके लिए आया है।

उत्तर- उपर्युक्त वाक्यांश दूरदर्शन का उद्घोषक स्वयं के लिए प्रयुक्त करता है।

6. **किसी की पीड़ा को बहुत बड़े दर्शक वर्ग तक पहुँचाने वाले व्यक्ति के लिए क्या-क्या आवश्यक है?**

उत्तर- उस व्यक्ति में उस पीड़ा के प्रति स्वयं संवेदनशील होने और दूसरे को संवेदनशील बनाने की कला होनी चाहिए।

7. **रघुवीर सहाय की कविता 'कैमरे में बंद अपाहिज' किस उद्देश्य को पूरा करती है?**

उत्तर- यह कविता टेलिविजन स्टूडियों के भीतर की उस दुनिया को समाने लाने का प्रयास है जो दु:ख-दर्द, यातना-वेदना को बेचना चाहती है।

8. **'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में किस शैली का प्रयोग हुआ है?**

उत्तर- संवाद एवं नाटकीय शैली का।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर -

1. **रघुवीर सहाय की कविताओं का मुख्य विषय क्या है?**

उत्तर- रघुवीर सहाय समकालीन हिंदी कविता के कवि रहे हैं, इसी कारण उन्होंने अपनी कविताओं में समकालीन प्रशासनिक व्यवस्था एवं गली मुहल्लों के वास्तविक चरित्र के साथ-साथ समाज में भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने वाले कारक जैसे बस, रेल, बाजार, संसद, दफ्तर, सड़क, चोराहे की अर्थव्यवस्था और इन कारकों की वास्तविक स्थिति के बारे में खुलकर लिखा है।

रघुवीर सहाय की लेखन की विषय-वस्तु में ईमान, संवेदनशीलता, मार्मिकता, व्यंग्य और सहजता दिखाई देती है। बड़े विषयों को अपनी कविताओं में स्थान देने की बजाय छोटे विषयों अर्थात् लघु की महत्ता को स्थान देने में विशेष रूचि दिखाते है।

2. **'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता का मूल भावार्थ समझाओं।**

उत्तर- 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में पत्रकारिता अर्थात् मीडिया के कारोबारी दबाव के कारण पैदा होने वाली स्वार्थपरता को सामने लाने का प्रयास किया गया है। मीडिया अपने कारोबार को चलाने के लिए एवं विख्यात बनाने के लिए शारीरिक रूप से असहाय व्यक्ति के साथ भी संवेदनहीनता का व्यवहार कर देती है। कविता में यह भी बताने का प्रयास किया है कि मीडिया की समझ में व्यक्ति की पीड़ा बाजारू है और मीडिया उस पीड़ा को अपने व्यापार का हिस्सा मानती है। अपने कार्यक्रमों को प्रसारित करने के लिए तथा उसे अत्यंत रोचक एवं संवेदनात्मक बनाने के लिए एक शारीरिक रूप से अक्षम मानव के साथ भी क्रूरता और संवेदनहीनता के व्यवहार का प्रदर्शन दर्शकों के सामने कर देती है।

3. **'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता के आधार पर बताओं कि दूरदर्शन का कार्यक्रम पूर्णतया रोचक और संवेदनात्मक कब बनता है?**

उत्तर- टेलिविजन और कैमरे के सामने प्रसारित होने वाले कार्यक्रम जिस प्रकार से दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत किये जाते है उनका वह रूप वास्तविक नहीं होता है। परदे के पीछे उनका बनावटी रूप छिपा होता है। कार्यक्रम को पूर्णतया सफल बनाने के लिए कैमरे वाले कई तरह से नाटकीय स्वरूपों एवं भंगिमाओं का निर्माण करते है जो दर्शकों को वास्तविक लगती है लेकिन उनका स्वरूप वास्तव में वैसा नहीं होता है। इस प्रकार की बनावटी और पीड़ादायक

परिस्थितियों को देखकर दर्शक और परदे पर प्रस्तुतकर्ता व्यक्ति में एक जैसे मनोभाव पैदा होने लगे अर्थात् दोनों ही रोने लगे या संवेदनात्मक हो जाए तो टेलिविजन का कार्यक्रम पूर्णतया सफल माना जाता है।

4. कवि रघुवीर सहाय कविता के अंत में यह क्यों कह रहे हैं कि 'परदे पर वक्त की कीमत है।' स्पष्ट करो।

उत्तर- परदे पर प्रस्तुत लगभग सभी कार्यक्रम व्यावसायिक होते हैं। उन कार्यक्रमों को दर्शक ज्यादा से ज्यादा देख सके इसके लिए कार्यक्रमों को रोचक और नाटकीय बनाने का प्रयास किया जाता है। कार्यक्रम अधिक रोचक और नाटकीय हो इसके लिए पात्र व्यक्ति को पूर्वाभ्यास करवाया जाता है। इसी प्रकार से जब कोई अपाहिज व्यक्ति कैमरे के सामने रोने ही वाला होता है तो कैमरा हटा लिया जाता है। जिससे कार्यक्रम में रोचकता, नाटकीयता और संवेदनात्मकता आ जाती है। कई बार कैमरा हटाने के लिए यह भी बहाना बना लिय जाता है कि परदे पर वक्त की कीमत है और यदि बार-बार के प्रयास के बाद भी वह अपाहिज व्यक्ति नहीं रोता है तो भी यही वाक्य कहकर कैमरे को हटा लिया जाता है कि परदे पर वक्त की कीमत है।

व्याख्यात्मक प्रश्नोत्तर -

1. फिर हम परदे पर दिखलाएँगे
फूली हुई आँख की एक बड़ी तसवीर
बहुत बड़ी तसवीर
और उसके होठों पर एक कसमसाहट भी।
उपर्युक्त पद्यांश की सप्रंसग व्याख्या करो।

उत्तर- फिर हम परदे..... कसमसाहट भी।

(1) संदर्भ - उपर्युक्त पद्यांश आधार हिन्दी पाठ्य-पुस्तक आरोह के अध्याय चार रघुवीर सहाय की कविता 'कैमरे में बंद अपाहिज' से अवतरित है।

(2) प्रसंग - उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने व्यापार के लालच में दूरदर्शन की संवेदनहीन कार्य शैली का चित्रण किया है।

(3) व्याख्या - कवि रघुवीर सहाय कहते हैं कि मीडियाकर्मी अपने कार्यक्रम को रोचक और आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाने के लिए अपाहिज व्यक्ति से भी बनावटी और संवेदनहीन व्यवहार करते हैं। अपाहिज व्यक्ति को स्वयं को अत्यंत ही दयनीय बनाकर दिखाने के लिए मजबूर कर दिया जाता है। इस प्रकार का हृदयहीन कार्य करके दूरदर्शनकर्मी अपने कार्यक्रम को विशेष बनाते है और दर्शकों का ध्यान कार्यक्रम की तरफ करके पैसा कमाते है। इन पंक्तियों के माध्यम् से कवि मीडियाकर्मियों की संवेदनहीनता और बाजारूपन की ओर संकेत करता है।

(4) विशेष - 1. पद्यांश की भाषा सीधी और सरल है।
2. पद्यांश की शैली नाटकीय एवं व्यंग्यात्मक है।
3. पद्यांश में करूण रस की अभिव्यक्ति हुई है।